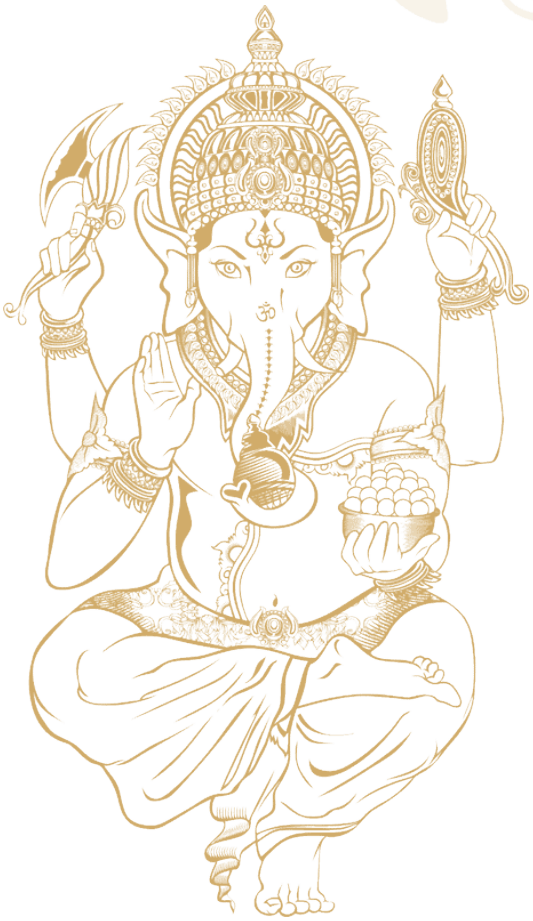

Satish shingan

02 Jun 1986

06:30 PM

Mumbai

Model: All-Dosha-Report **Order No: 121421201**

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**02/06/1986**
दिवस	सोमवार
जन्म समय	**18:30:00 कला**
इष्ट	31:12:59 घटी
स्थान	**Mumbai**
राज्य	Maharashtra
देश	India

अक्षांश	18:58:00 उत्तर
रेखांश	72:50:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:38:40 कला
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 कला
स्थानिक वेल	17:51:20 कला
वेलान्तर	00:02:08 कला
साम्पातिक वेल	10:34:09 कला
सूर्योदय	06:00:48 कला
सूर्यास्त	19:12:31 कला
दिनमान	13:11:43 कला
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	ग्रीष्म
सूर्याचे अंश	18:01:59 वृषभ
लग्नाचे अंश	09:25:15 वृश्चिक

अवकहड़ा चक्र

लग्न–लग्नाधिपति	वृश्चिक – मंगळ
राशि–स्वामी	**मीन – गुरु**
नक्षत्र–चरण	**रेवती – 2**
नक्षत्र स्वामी	बुध
योग	सौभाग्य
करण	बव
गण	देव
योनि	गज
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	सर्प
युँजा	पूर्व
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	दो–दौलत सिंह
पाया(राशि–नक्षत्र)	रजत – स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मिथुन

पंचांग

आजोबांचें नांव _____:
बडीलांचे नांव _____:
आईचें नांव _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	माह	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1908	ज्येष्ठ	12
पंजाबी	संवत : 2043	ज्येष्ठ	20
बंगाली	सन् : 1393	ज्येष्ठ	18
तमिल	संवत : 2043	वैकाशी	19
केरल	कोल्लम : 1161	इदवन	19
नेपाली	संवत : 2043	ज्येष्ठ	19
चैत्रादी	संवत : 2043	ज्येष्ठ	कृष्ण 10
कार्तिकादी	संवत : 2043	वैशाख	कृष्ण 10

पंचांग

सूर्योदय समयी तिथि _____: 10
तिथि समाप्ति वेल _____: 08:06:45
जन्म तिथि _____: 11
सूर्योदय समयी नक्षत्र _____: उ.भाद्रपद
नक्षत्र समाप्ति वेल _____: 06:14:57 कला
जन्म योग _____: रेवती
सूर्योदय समयी योग _____: आयुष्मान
योग समाप्ति वेल _____: 16:47:46 कला
जन्म योग _____: सौभाग्य
सूर्योदय समयी करण _____: विष्टि
करण समाप्ति वेल _____: 08:06:45 कला
जन्म करण _____: बव
भयात _____: 30:37:38
भभोग _____: 65:50:53
भोग्य दशा वेल _____: बुध 9 वर्ष 0 मा 19 दि

घात चक्र

मास _____: फाल्गुन
तिथि _____: 5-10-15
दिवस _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: आश्लेषा
योग _____: वज्र
करण _____: चतुष्पाद
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: गरूड़
लग्न _____: सिंह
रवि _____: मिथुन
चन्द्र _____: कुम्भ
मंगळ _____: कर्क
बुध _____: कुम्भ
गुरु _____: सिंह
शुक्र _____: कन्या
शनि _____: वृषभ
राहु _____: तुला

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

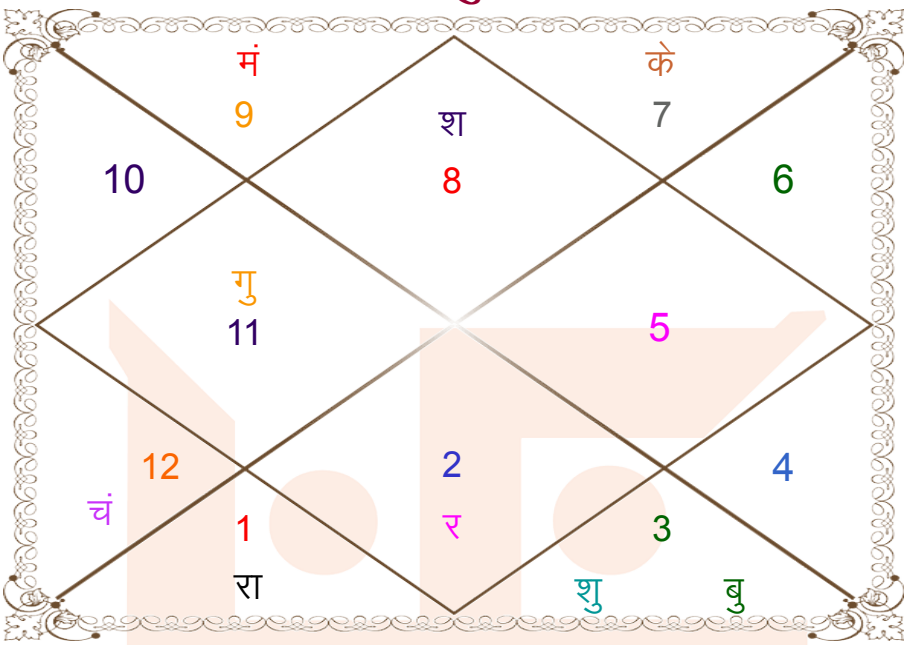

चन्द्र कुंडली

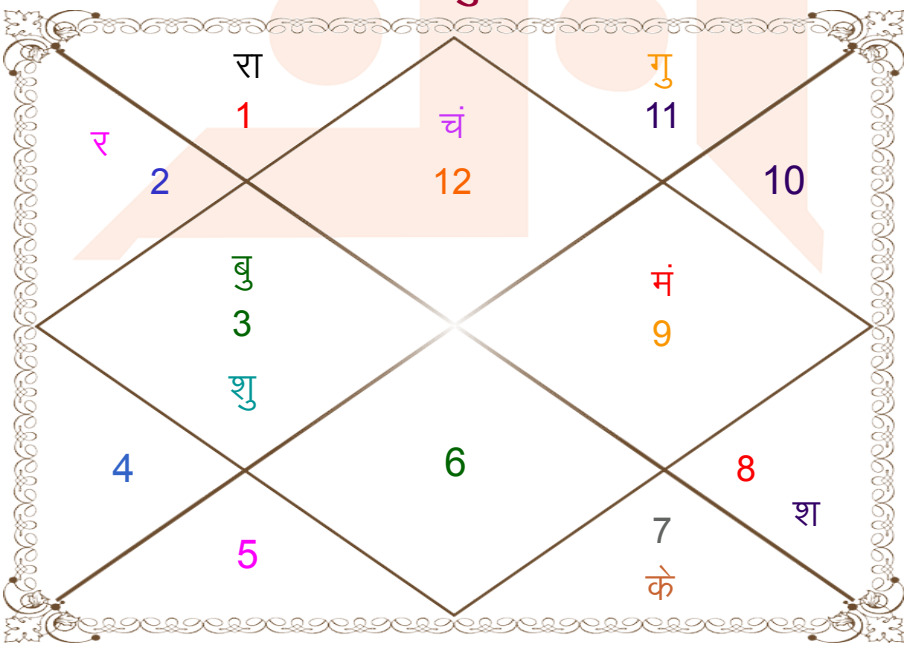

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

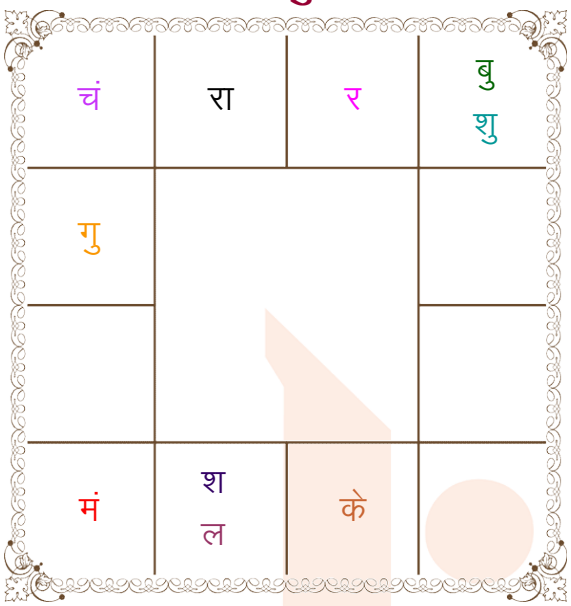

लग्न कुंडली

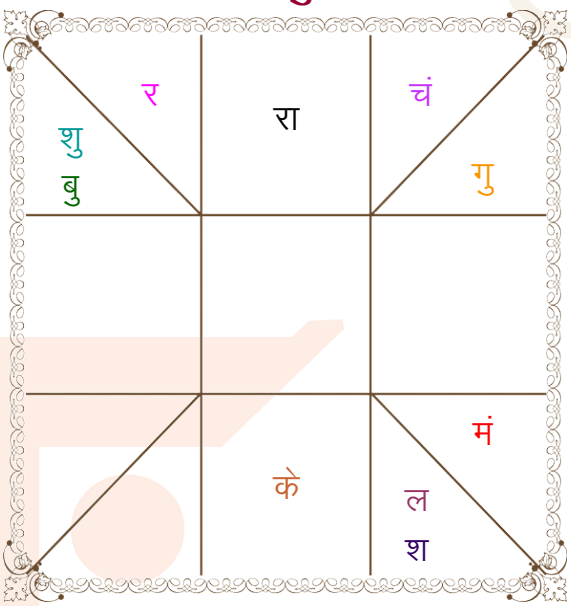

विंशोत्तरी

बुध 9वर्ष 0मा 19दि

बुध

02/06/1986

22/06/2098

बुध	22/06/1995
केतु	22/06/2002
शुक्र	22/06/2022
रवि	22/06/2028
चन्द्र	22/06/2038
मंगळ	22/06/2045
राहु	22/06/2063
गुरु	22/06/2079
शनि	22/06/2098

योगिनी

उल्का 3वर्ष 2मा 10दि

सिद्धा

13/08/2025

12/08/2032

सिद्धा	23/12/2026
संकटा	13/07/2028
मंगळा	22/09/2028
पिंगला	11/02/2029
धान्या	12/09/2029
भ्रामरी	23/06/2030
भद्रिका	13/06/2031
उल्का	12/08/2032

ग्रह स्पष्ट तथा त्यांची स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृश्चि	09:25:15	320:36:01	अनुराधा	2	17	मंगळ	शनि	शुक्र	----
सूर्य			वृष	18:01:59	00:57:30	रोहिणी	3	4	शुक्र	चंद्र	बुध	शत्रु राशि
चंद्र			मीन	22:53:54	12:09:12	रेवती	2	27	गुरु	बुध	चंद्र	सम राशि
मंगळ			धनु	29:11:28	00:04:44	उत्तराषाढ़ा	1	21	गुरु	सूर्य	मंगळ	मित्र राशि
बुध			मिथु	00:23:13	02:00:35	मृगशिरा	3	5	बुध	मंगळ	बुध	स्वगृही
गुरु			कुंभ	26:42:00	00:07:07	पूभाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	शुक्र	सम राशि
शुक्र			मिथु	20:39:03	01:11:27	पुनर्वसु	1	7	बुध	गुरु	गुरु	मित्र राशि
शनि	व		वृश्चि	12:20:18	00:04:26	अनुराधा	3	17	मंगळ	शनि	मंगळ	शत्रु राशि
राहु			मेष	05:41:13	00:01:13	अश्विनी	2	1	मंगळ	केतु	राहु	शत्रु राशि
केतु			तुला	05:41:13	00:01:13	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगळ	चंद्र	सम राशि
हर्ष	व		वृश्चि	27:05:06	00:02:25	ज्येष्ठा	4	18	मंगळ	बुध	गुरु	----
नेप	व		धनु	11:23:12	00:01:27	मूल	4	19	गुरु	केतु	शनि	----
प्लूटो	व		तुला	11:21:07	00:01:16	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	शनि	----
दशम भाव			सिंह	13:08:14	--	मघा	--	10	सूर्य	केतु	बुध	--

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट
लाहिरी अयनांश : 23:39:54

लग्न–चलित

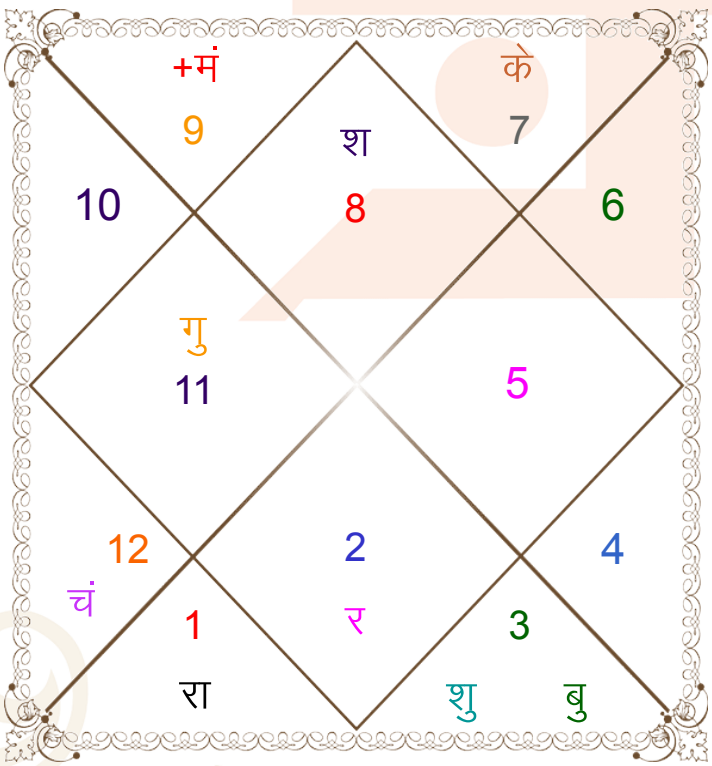

चन्द्र कुंडली

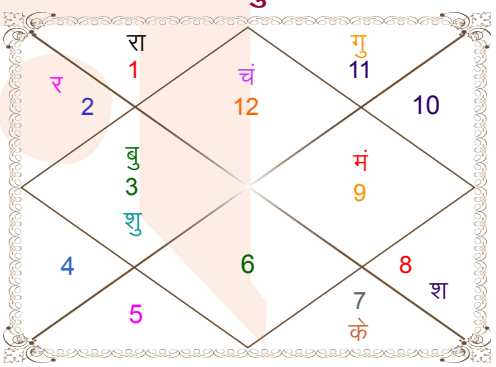

नवमांश कुंडली

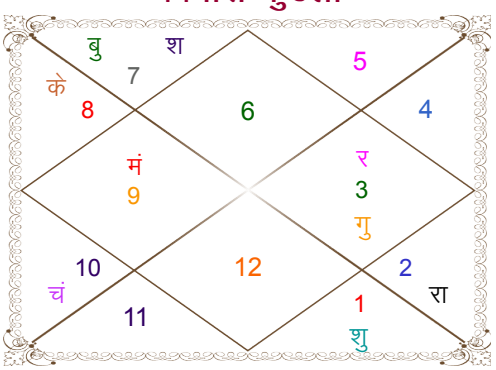

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	तुला	25:02:25	वृश्चिक	09:25:15
2	वृश्चिक	25:02:25	धनु	10:39:35
3	धनु	26:16:45	मकर	11:53:54
4	मकर	27:31:04	कुम्भ	13:08:14
5	कुम्भ	27:31:04	मीन	11:53:54
6	मीन	26:16:45	मेष	10:39:35
7	मेष	25:02:25	वृषभ	09:25:15
8	वृषभ	25:02:25	मिथुन	10:39:35
9	मिथुन	26:16:45	कर्क	11:53:54
10	कर्क	27:31:04	सिंह	13:08:14
11	सिंह	27:31:04	कन्या	11:53:54
12	कन्या	26:16:45	तुला	10:39:35

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृश्चिक	09:25:15
2	धनु	08:55:53
3	मकर	10:14:57
4	कुम्भ	13:08:14
5	मीन	15:11:22
6	मेष	13:56:23
7	वृषभ	09:25:15
8	मिथुन	08:55:53
9	कर्क	10:14:57
10	सिंह	13:08:14
11	कन्या	15:11:22
12	तुला	13:56:23

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद

चलित कुंडली

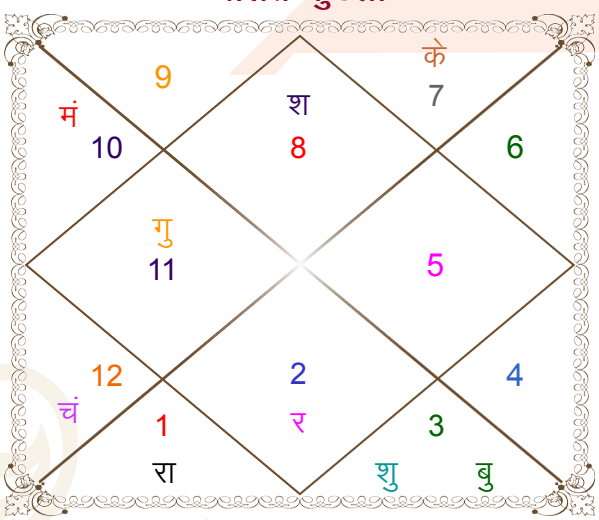

भाव कुंडली

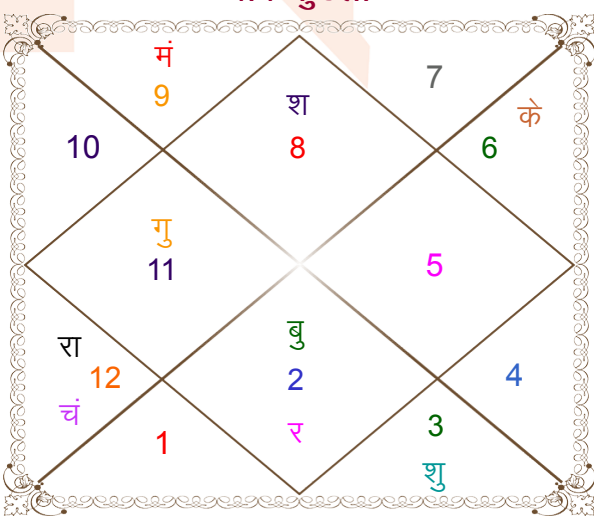

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	——— कारक ———		——— अवस्था ———				
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	पुत्र	पितृ	कुमार	खल	आगमन	7.89	61 %
चंद्र	भ्रातृ	मातृ	कुमार	शक्त	निद्रा	8.39	43 %
मंगळ	आत्मा	भ्रातृ	मृत	मुदित	भोजन	5.60	60 %
बुध	कलत्र	ज्ञाति	बाल	स्वस्थ	उपवेशन	3.14	59 %
गुरु	अमात्य	धन	मृत	शक्त	नेत्रपाणि	2.41	31 %
शुक्र	मातृ	कलत्र	वृद्ध	मुदित	निद्रा	4.28	36 %
शनि	ज्ञाति	आयुष्य	युवा	खल	उपवेशन	4.38	71 %
राहु	———	ज्ञान	बाल	खल	नृत्यलिप्सा	0.00	34 %
केतु	———	मोक्ष	बाल	शान्त	आगमन	0.00	34 %
एकुण						**36.10**	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद

चलित कुंडली

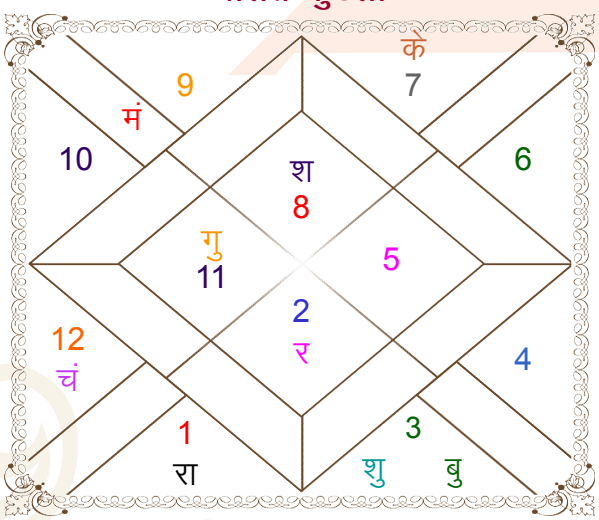

लग्न–चलित

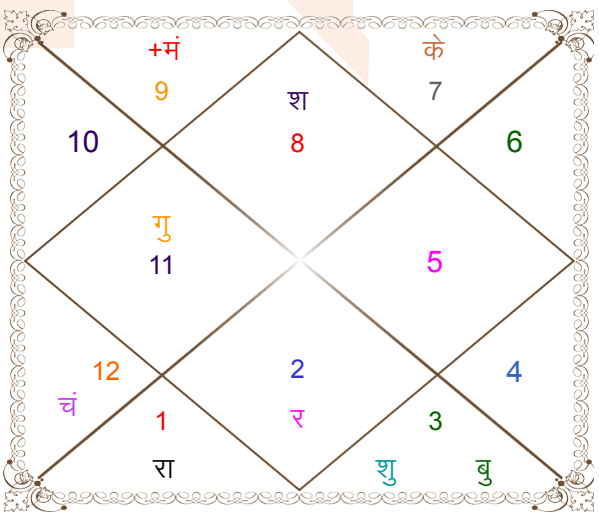

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा वेल : बुध 9 वर्ष 0 महिना 19 दिवस

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
02/06/1986		22/06/1995		22/06/2002		22/06/2022		22/06/2028	
22/06/1995		22/06/2002		22/06/2022		22/06/2028		22/06/2038	
	00/00/0000	केतु	19/11/1995	शुक्र	22/10/2005	सूर्य	10/10/2022	चंद्र	22/04/2029
	00/00/0000	शुक्र	18/01/1997	सूर्य	22/10/2006	चंद्र	10/04/2023	मंगळ	21/11/2029
	00/00/0000	सूर्य	26/05/1997	चंद्र	22/06/2008	मंगळ	16/08/2023	राहु	23/05/2031
	02/06/1986	चंद्र	25/12/1997	मंगळ	22/08/2009	राहु	10/07/2024	गुरु	21/09/2032
चंद्र	22/12/1986	मंगळ	23/05/1998	राहु	22/08/2012	गुरु	28/04/2025	शनि	22/04/2034
मंगळ	19/12/1987	राहु	10/06/1999	गुरु	23/04/2015	शनि	10/04/2026	बुध	22/09/2035
राहु	07/07/1990	गुरु	16/05/2000	शनि	22/06/2018	बुध	15/02/2027	केतु	22/04/2036
गुरु	12/10/1992	शनि	25/06/2001	बुध	22/04/2021	केतु	22/06/2027	शुक्र	22/12/2037
शनि	22/06/1995	बुध	22/06/2002	केतु	22/06/2022	शुक्र	22/06/2028	सूर्य	22/06/2038

मंगळ 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
22/06/2038		22/06/2045		22/06/2063		22/06/2079		22/06/2098	
22/06/2045		22/06/2063		22/06/2079		22/06/2098		00/00/0000	
मंगळ	18/11/2038	राहु	04/03/2048	गुरु	10/08/2065	शनि	25/06/2082	बुध	19/11/2100
राहु	07/12/2039	गुरु	29/07/2050	शनि	21/02/2068	बुध	04/03/2085	केतु	16/11/2101
गुरु	12/11/2040	शनि	04/06/2053	बुध	29/05/2070	केतु	13/04/2086	शुक्र	16/09/2104
शनि	22/12/2041	बुध	22/12/2055	केतु	05/05/2071	शुक्र	13/06/2089	सूर्य	23/07/2105
बुध	19/12/2042	केतु	09/01/2057	शुक्र	03/01/2074	सूर्य	26/05/2090	चंद्र	03/06/2106
केतु	17/05/2043	शुक्र	09/01/2060	सूर्य	22/10/2074	चंद्र	25/12/2091		00/00/0000
शुक्र	16/07/2044	सूर्य	03/12/2060	चंद्र	21/02/2076	मंगळ	02/02/2093		00/00/0000
सूर्य	21/11/2044	चंद्र	04/06/2062	मंगळ	27/01/2077	राहु	10/12/2095		00/00/0000
चंद्र	22/06/2045	मंगळ	22/06/2063	राहु	22/06/2079	गुरु	22/06/2098		00/00/0000

- वरील दशा चन्द्रमा चे अंशा चे आधार वर्ती दीलेली आहे. भयात भभोग चे आधार अनुसार दशाच्या भोग्यकाल बुध 9 वर्ष 1 मा 3 दि होता आहेत.
- वरील दिनांक दशा समाप्ति चा समय दाखवते. विंशोत्तरी दशा पूर्ण 120 वर्षाची बिना आयुनिर्णय दिलेली आहे.

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र	
28/04/2025		10/04/2026		15/02/2027		22/06/2027		22/06/2028	
10/04/2026		15/02/2027		22/06/2027		22/06/2028		22/04/2029	
शनि	22/06/2025	बुध	24/05/2026	केतु	22/02/2027	शुक्र	22/08/2027	चंद्र	17/07/2028
बुध	10/08/2025	केतु	11/06/2026	शुक्र	15/03/2027	सूर्य	10/09/2027	मंगळ	04/08/2028
केतु	31/08/2025	शुक्र	02/08/2026	सूर्य	22/03/2027	चंद्र	10/10/2027	राहु	19/09/2028
शुक्र	27/10/2025	सूर्य	18/08/2026	चंद्र	01/04/2027	मंगळ	31/10/2027	गुरु	29/10/2028
सूर्य	14/11/2025	चंद्र	12/09/2026	मंगळ	09/04/2027	राहु	25/12/2027	शनि	16/12/2028
चंद्र	13/12/2025	मंगळ	01/10/2026	राहु	28/04/2027	गुरु	12/02/2028	बुध	28/01/2029
मंगळ	02/01/2026	राहु	16/11/2026	गुरु	15/05/2027	शनि	10/04/2028	केतु	15/02/2029
राहु	23/02/2026	गुरु	27/12/2026	शनि	04/06/2027	बुध	31/05/2028	शुक्र	07/04/2029
गुरु	10/04/2026	शनि	15/02/2027	बुध	22/06/2027	केतु	22/06/2028	सूर्य	22/04/2029

चंद्र - मंगळ		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध	
22/04/2029		21/11/2029		23/05/2031		21/09/2032		22/04/2034	
21/11/2029		23/05/2031		21/09/2032		22/04/2034		22/09/2035	
मंगळ	05/05/2029	राहु	11/02/2030	गुरु	27/07/2031	शनि	22/12/2032	बुध	05/07/2034
राहु	05/06/2029	गुरु	25/04/2030	शनि	12/10/2031	बुध	14/03/2033	केतु	04/08/2034
गुरु	04/07/2029	शनि	21/07/2030	बुध	20/12/2031	केतु	16/04/2033	शुक्र	29/10/2034
शनि	07/08/2029	बुध	07/10/2030	केतु	17/01/2032	शुक्र	22/07/2033	सूर्य	24/11/2034
बुध	06/09/2029	केतु	08/11/2030	शुक्र	08/04/2032	सूर्य	20/08/2033	चंद्र	06/01/2035
केतु	18/09/2029	शुक्र	07/02/2031	सूर्य	02/05/2032	चंद्र	07/10/2033	मंगळ	05/02/2035
शुक्र	24/10/2029	सूर्य	06/03/2031	चंद्र	12/06/2032	मंगळ	10/11/2033	राहु	24/04/2035
सूर्य	03/11/2029	चंद्र	21/04/2031	मंगळ	10/07/2032	राहु	04/02/2034	गुरु	02/07/2035
चंद्र	21/11/2029	मंगळ	23/05/2031	राहु	21/09/2032	गुरु	22/04/2034	शनि	22/09/2035

चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगळ - मंगळ		मंगळ - राहु	
22/09/2035		22/04/2036		22/12/2037		22/06/2038		18/11/2038	
22/04/2036		22/12/2037		22/06/2038		18/11/2038		07/12/2039	
केतु	04/10/2035	शुक्र	01/08/2036	सूर्य	31/12/2037	मंगळ	01/07/2038	राहु	15/01/2039
शुक्र	09/11/2035	सूर्य	01/09/2036	चंद्र	15/01/2038	राहु	23/07/2038	गुरु	07/03/2039
सूर्य	19/11/2035	चंद्र	21/10/2036	मंगळ	26/01/2038	गुरु	12/08/2038	शनि	07/05/2039
चंद्र	07/12/2035	मंगळ	26/11/2036	राहु	22/02/2038	शनि	05/09/2038	बुध	30/06/2039
मंगळ	20/12/2035	राहु	25/02/2037	गुरु	18/03/2038	बुध	26/09/2038	केतु	22/07/2039
राहु	21/01/2036	गुरु	17/05/2037	शनि	16/04/2038	केतु	05/10/2038	शुक्र	24/09/2039
गुरु	18/02/2036	शनि	22/08/2037	बुध	12/05/2038	शुक्र	29/10/2038	सूर्य	14/10/2039
शनि	23/03/2036	बुध	16/11/2037	केतु	23/05/2038	सूर्य	06/11/2038	चंद्र	15/11/2039
बुध	22/04/2036	केतु	22/12/2037	शुक्र	22/06/2038	चंद्र	18/11/2038	मंगळ	07/12/2039

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगळ - गुरु		मंगळ - शनि		मंगळ - बुध		मंगळ - केतु		मंगळ - शुक्र	
07/12/2039		**12/11/2040**		**22/12/2041**		**19/12/2042**		**17/05/2043**	
12/11/2040		**22/12/2041**		**19/12/2042**		**17/05/2043**		**16/07/2044**	
गुरु	21/01/2040	शनि	15/01/2041	बुध	11/02/2042	केतु	28/12/2042	शुक्र	27/07/2043
शनि	15/03/2040	बुध	13/03/2041	केतु	04/03/2042	शुक्र	21/01/2043	सूर्य	17/08/2043
बुध	03/05/2040	केतु	06/04/2041	शुक्र	03/05/2042	सूर्य	29/01/2043	चंद्र	22/09/2043
केतु	23/05/2040	शुक्र	12/06/2041	सूर्य	22/05/2042	चंद्र	10/02/2043	मंगळ	17/10/2043
शुक्र	18/07/2040	सूर्य	03/07/2041	चंद्र	21/06/2042	मंगळ	19/02/2043	राहु	20/12/2043
सूर्य	04/08/2040	चंद्र	05/08/2041	मंगळ	12/07/2042	राहु	13/03/2043	गुरु	14/02/2044
चंद्र	02/09/2040	मंगळ	29/08/2041	राहु	04/09/2042	गुरु	02/04/2043	शनि	22/04/2044
मंगळ	22/09/2040	राहु	29/10/2041	गुरु	22/10/2042	शनि	26/04/2043	बुध	21/06/2044
राहु	12/11/2040	गुरु	22/12/2041	शनि	19/12/2042	बुध	17/05/2043	केतु	16/07/2044

मंगळ - सूर्य		मंगळ - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि	
16/07/2044		**21/11/2044**		**22/06/2045**		**04/03/2048**		**29/07/2050**	
21/11/2044		**22/06/2045**		**04/03/2048**		**29/07/2050**		**04/06/2053**	
सूर्य	22/07/2044	चंद्र	09/12/2044	राहु	17/11/2045	गुरु	29/06/2048	शनि	10/01/2051
चंद्र	02/08/2044	मंगळ	21/12/2044	गुरु	28/03/2046	शनि	15/11/2048	बुध	06/06/2051
मंगळ	10/08/2044	राहु	22/01/2045	शनि	01/09/2046	बुध	19/03/2049	केतु	06/08/2051
राहु	29/08/2044	गुरु	19/02/2045	बुध	18/01/2047	केतु	09/05/2049	शुक्र	26/01/2052
गुरु	15/09/2044	शनि	25/03/2045	केतु	17/03/2047	शुक्र	02/10/2049	सूर्य	18/03/2052
शनि	05/10/2044	बुध	24/04/2045	शुक्र	28/08/2047	सूर्य	15/11/2049	चंद्र	13/06/2052
बुध	23/10/2044	केतु	07/05/2045	सूर्य	16/10/2047	चंद्र	27/01/2050	मंगळ	13/08/2052
केतु	31/10/2044	शुक्र	11/06/2045	चंद्र	07/01/2048	मंगळ	19/03/2050	राहु	16/01/2053
शुक्र	21/11/2044	सूर्य	22/06/2045	मंगळ	04/03/2048	राहु	29/07/2050	गुरु	04/06/2053

राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र	
04/06/2053		**22/12/2055**		**09/01/2057**		**09/01/2060**		**03/12/2060**	
22/12/2055		**09/01/2057**		**09/01/2060**		**03/12/2060**		**04/06/2062**	
बुध	14/10/2053	केतु	13/01/2056	शुक्र	10/07/2057	सूर्य	26/01/2060	चंद्र	18/01/2061
केतु	07/12/2053	शुक्र	17/03/2056	सूर्य	03/09/2057	चंद्र	22/02/2060	मंगळ	19/02/2061
शुक्र	11/05/2054	सूर्य	06/04/2056	चंद्र	03/12/2057	मंगळ	12/03/2060	राहु	12/05/2061
सूर्य	27/06/2054	चंद्र	08/05/2056	मंगळ	05/02/2058	राहु	01/05/2060	गुरु	24/07/2061
चंद्र	12/09/2054	मंगळ	30/05/2056	राहु	20/07/2058	गुरु	14/06/2060	शनि	19/10/2061
मंगळ	06/11/2054	राहु	26/07/2056	गुरु	13/12/2058	शनि	05/08/2060	बुध	04/01/2062
राहु	25/03/2055	गुरु	16/09/2056	शनि	04/06/2059	बुध	20/09/2060	केतु	05/02/2062
गुरु	28/07/2055	शनि	15/11/2056	बुध	06/11/2059	केतु	09/10/2060	शुक्र	08/05/2062
शनि	22/12/2055	बुध	09/01/2057	केतु	09/01/2060	शुक्र	03/12/2060	सूर्य	04/06/2062

शुभाशुभ ज्ञान

शुभाशुभ ज्ञान करण्याची आपणास आपल्या मित्र व शत्रुविषयी बोध करते. मूलांक, भाग्यांक व, मित्रांकद्वारे मैत्री व भागीदारी करण्यात फायदा होईल, त्याच प्रमाणे शुभ दिवस व शुभवर्ष प्रगतिकारक ठरेल, शुभग्रहांची, दशा सुद्धा लाभकारक धरते, मित्रलग्न व मित्रराशि लाभदायक अस्ते.

शुभरत्न व धातु तसेच रंग धारण केल्याने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य लाभते, भाग्य रत्न धारण केल्याने भाग्यवृद्धि होते. शुभ वेली कोणत्याही कार्यांचा आरम्भ केल्याने अपेक्षित यश मिलते. इष्टदेव–देवतांचे ध्यान व जप केल्याने मानसिक शक्ति वाढते व यश लवकर मिलते. शुभ पदार्थ, अन्न, द्रव्य इत्यादि चे दान केल्याने ही शुभफल मिलते. व्यापार–उधोग शुभ दिशेला केल्यास त्यात भरभराट होउन अपेक्षत लाभ होतो. शुभ–अशुभ ज्ञानाचा प्रयोग दैनंदिन जीवनात शुभफलदायी ठरतो.

मूलांक	2
भाग्यांक	5
मित्र अंक	2, 7, 8, 5
शत्रु अंक	4, 6
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिवस	रवि, सोम, मंगळ
शुभ ग्रह	रवि, चन्द्र, मंगळ
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	कुम्भ, कर्क, कन्या
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	पोवले
शुभ उपरत्न	लाल हकीक
भाग्य रत्न	मोती
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सकाली के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	तूप

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं. वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं. यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है. ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो. यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो. मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है. बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है. चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है. उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है. साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है. विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है. जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए. जिन्हें 50–75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए. जो रत्न केवल 25–50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए. अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुष्कराज	गुरु	92%	सुख, धन, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	80%	सन्तति सुख, भाग्योदय
पोवले	मंगळ	77%	धन, शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
नीलम	शनि	73%	स्वास्थ्य, पराक्रम, सुख
माणिक्य	सूर्य	67%	दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
गोमेद	राहु	31%	शत्रु व रोग, धन हानि
पन्ना	बुध	0%	दुर्घटना, हानि
हीरा	शुक्र	0%	दुर्घटना, दाम्पत्य कष्ट, व्यय
लहसुनिया	केतु	0%	व्यय, दुर्घटना

रत्न की शुभता

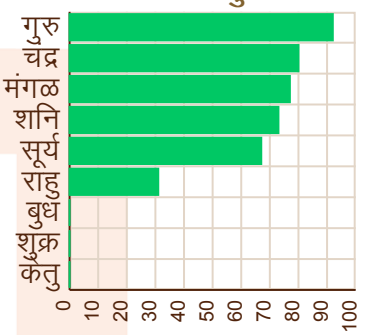

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	पोवले	पन्ना	पुष्कराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	22/06/1995	73%	67%	77%	0%	92%	0%	73%	31%	0%
केतु	22/06/2002	55%	67%	83%	0%	92%	0%	61%	6%	16%
शुक्र	22/06/2022	55%	67%	77%	0%	92%	0%	80%	44%	3%
सूर्य	22/06/2028	80%	86%	83%	0%	98%	0%	61%	6%	0%
चंद्र	22/06/2038	73%	92%	77%	0%	92%	0%	73%	6%	0%
मंगळ	22/06/2045	73%	86%	89%	0%	98%	0%	73%	6%	3%
राहु	22/06/2063	55%	67%	64%	0%	92%	0%	80%	53%	0%
गुरु	22/06/2079	73%	86%	83%	0%	100%	0%	73%	31%	0%
शनि	22/06/2098	55%	67%	64%	0%	92%	0%	86%	44%	0%

साढ़ेसाती विषयी माहिती

गोचर शनि जेव्हां कुंडलीतीत चंद्राला बारावा, पहिला व दूसरा येईल, तेव्हा साडेसाती सुरु होते. कुंडलीतीत चन्द्राला गोचर शनि चौथा व आठवा आला असता, ढैय्या म्हणजे अडीचकी सुरु होते. साडेसाती चा प्रभाव साडेसात वर्ष व ढैय्या चा प्रभाव अडीच वर्षें मानला गेला आहे साडेसाती चा प्रभाव सामान्यापणे शारिरीक, मानसिक व आर्थिक त्रासाचा जातो तर काहीवेलप आश्चर्यचकित प्रगतिही या कालात होते.

सामान्यापणे मनुष्याच्या जीवनात साडेसाती तीन वेला एते– पहिल्यांदा बालपणि, दूस्रयांदा तरुणपणि व तीस्रयांदा म्हातारपणि. पहिलया साडेसाती चा प्रभाव शिक्षण व आई–वडिलावर पडतो. दुस्रया साडेसाती चा प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति व कुटुंबावर पड़तो. तिसरया साडेसाती चा प्रभाव शारिरीक आरोग्यावर पडतो.

खाली दिलेल्या कोष्टकवरुन साडेसाती चा काल व प्रत्येक अडीचकी (ढय्या) चे शुभाशुभ फलासंबंधीची माहिती समजू शकेल.

प्रथम चक्रः

साढ़ेसातीचा पहला चरण	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	17/04/1998-07/06/2000	----------	----------
चतुर्थस्थान चरण	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
अष्टमस्थान चरण	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------

द्वितीय चक्रः

साढ़ेसातीचा पहला चरण	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
चतुर्थस्थान चरण	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
अष्टमस्थान चरण	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044

तृतीय चक्रः

साढ़ेसातीचा पहला चरण	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
चतुर्थस्थान चरण	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
अष्टमस्थान चरण	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	----------

शनि चा ढैया फल

ढैया चा प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसातीचा पहला चरण	शुभ	सुख
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	शुभ	सन्तति
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	सम	शत्रु से कष्ट
चतुर्थस्थान चरण	अशुभ	दुर्घटणा पासून सुरक्षा
अष्टमस्थान चरण	सम	कम खर्च

साढेसाती वर उपाय

शनि च्या साडेसाती दरम्यान होणार्या अशुभ प्रभावांची तीव्रता कमी होना साठी दान, पूजन व्रत, मंत्रोच्चार आदि उपाय आहेत. शनिवारी काली काम्बल, काली उड़द, काले–तिल, कालयारंगाची चर्मची चप्पल, काले कापड़, लोखंडाचे दान करावे. शनिदेवाची पूजा, दर्शन व शनिवार चा उपवास करावा उपावास च्या दिवशी फले उड़द चा खाध वस्तु, हरभरे, बेसन, काले तिल, काले मीठ या वस्तुंचेच सेवन करावे पाईजे. स्वतः किवां योग्य गुरुजीकड्न खालील शनिमंत्रचा 19000 जप करुन ध्यावा.

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि चा साडेसातीत शारीरिक, मानसिक व कौटुंबिक शान्ति आणि समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता व अंगीकृत कार्यात प्रगति होण्या साठी खालील महामृत्युंजय मंत्रचा 125000 जप स्वतः करावा किंवा योग्य पूरोहिताकड्न करवून ध्यावा.

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

किवां खालील मंत्रचा कमीत कमी 108 वेला जप करावौं.

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

साढ़ेसाती च अशुभत्व कमी करुन् शुभत्व वाढवण्या साठी 5–1/4 रत्ती वजना च नीलम रत्न पंचधातु उजव्या हाताचा मध्ल्या बोटात धारण करावे. घोडायाच्या नालेची किंवा बोटीच्या कीलची अंगठी मधल्या बोटात वापरवी.

अंगठी किंवा पेन्डन्ट शुक्ल पक्षा चा शनिवारी सायंकाली सूयदृस्ता चा अर्धातास पूवदृ धारण करावी. पुष्य, अनुराधा किंवा उतरा भाद्रपदा या नक्षत्र पैकी जे नक्षत्र शनिवारी असेल त्या दिवशी अंगठी धारण करावी. अंगठी धारण करण्या पूवदृ शुद्ध निरसे दूध व गंगाजलानें अंगठीस अभिषेक करावा. धूप–दीप लावून पूजा करावी व खालील मंत्र 108 वेला जपून अंगुठी धारण करावी.

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगठी धारण केल्या नंतर शनि च्या वस्तूंचे दान करावे या मुले शनिचा अशुभ परिणामांची तीव्रता कमी होईल व आपल्या सुख–शान्ति–समृद्धि ची वाढ़ होईल.

मांगलिक विचार

जेह्वा वर किंवा कन्या ची कुंडलीत मंगळ, लग्न चतुर्थ, सप्तम, तसेच द्वादश भाव असेल तेह्वा असे जातक मंगळ दोषी होतात.।। यथोक्तम।। लग्ने व्यये च पातले जामित्रे चाष्टमे कुजे. स्त्री भर्तुविनाशाय भर्तुः पत्नी विनाशयेत्. मांगळिक दोष लग्न पासून जास्ती प्रबल होतात, पण चंद्रमा पासून यांचा दोष कम आहे. जर शस्त्रनुसार वर अणि कन्या चा मांगळिक दोष भंग होतात तर यांचे दम्पती जीवन सुखी अणि प्रसन्नता युद्ध होणार. यांचे विपरीत बगैर दोष भंग झाले, मांगळिक वर कन्या ला जीवनां चे अनेक अनावश्यक त्रास तसेच अडचणांचे सामना होणार. अतः विवाहा पूर्वी शुद्ध कुंडली मिलान करून हा दोष उचित निवारण करून दांपत्य जीवन शुरू कराय ला पहिजे. ज्यापासून जीवनात शान्ती तसेच संपन्नता होणारी.

****

तुमची जन्म कुण्डीत मंगळ द्वितीय भावात आहे, हा भाव वाणी आणि कुटुम्ब संबन्धी भाव आहे अतः मंगळ चा प्रभाव पासून तुमचे परिवार ची सुख शांति तसेच समृद्धि सामान्य रहणारी. तसेच कधीं–मधीं परिवार मधे मतभेद होउ सकतात. या मुळे दक्षिण भारत ला यांचा नाव (कुज दोष) आहे, तुमची वाणी मधे ओजस्विता रहणारी तसेच आपण पासून सर्व प्रभावित रहणारे सम्पत्ती साठी हा स्थिति चांगली रहणारी. तसेच स्वतः चे परिश्रम आणि पराक्रम पासून धन आणि सुख संपत्ति प्राप्त करून परिवार संतुष्ट कराय ची समर्थता रहणारी. कुंडलीत द्वितीय भाव चा मंगळ पंचम भाव वर दृष्टि पासून पुत्र संतति होणार तसेच जीवन मधे पूर्ण सुख आणि सहयोग ची प्राप्ति होणारी. पण संतति प्राप्ति साठी काही उसीर होउ सकतात आपण उच्च शिक्षा ग्रहण करणारी. अष्टम भाव वर मंगळ ची दृष्टि होण्या मुळे शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य तसेच कधीं–मधीं पित्त आणि–उष्णता पासून त्रास होउ सकतात, पण यांचा दुष्प्रभाव नाय होणार. सांसारिक महत्वांचे शुभ आणि महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होणारे. नवम भाव वर मंगळ ची दृष्टि पासून आपण कोणी पण कार्य मधे परिश्रम पासून भाग्य चे निर्माण करणारे तसेच जीवन मधे उन्नति चे रस्ते वर चलणारे आपण भाग्य मधे कमी आणि कर्म मधे जास्ती विश्वास ठेवणारे. द्वितीय भाव मंगळ चा प्रभाव पासून पारिवारिक सुख शांति तसेच समृद्धि नेहमी ठेवणार परिवार चा उचित पालण करणारे ते पण तुम्हाला सुखांचा सहयोग देणारे. दांपत्य जीवन सुखी ठेवाय साठी तुम्हाला मांगळिक शिवाय पासून विवाह करायला पाहिजे, या पासून तुम्हाला सुखी जीवन आणि साधन संपन्न तसेच परस्पर सहयोग मिळेल आणि मानसिक संतुष्टि प्राप्त होणारी.

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुडली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली वृश्चिक लग्न की हैं। वृश्चिक लग्न के प्रभाव से आपके व्यक्तित्व पर मंगल का प्रभाव अधिक देखने को मिलता है। स्वभाव में उग्रता होने के कारण आप नेतृत्व शक्ति अच्छी है, परन्तु स्थिर राशि लग्न में होने के कारण आपके जीवन में स्थिरता रहती हैं। आप हर कार्य को टिक कर करते हैं। जल तत्व होने के कारण जिस तरह जल कभी बहुत शान्त और कभी उसमें उग्रता आने पर सब-कुछ तहस-नहस कर देता है वहीं बातें आपमें भी पायी जाती हैं। इसलिए आपको अपने क्रोध पर नियंत्रण बनाये रखना चाहिए क्योंकि ऐसे में अक्सर आप अपना ही नुकसान कर बैठते हैं।

आप बहुत जल्दी घुल-मिल जाते हैं और सभी के बीच में अपनी जगह बना लेते हैं।

आपकी याददाश्त बहुत अच्छी है और कुछ भी भूलते नहीं है। व आपकी सहन शक्ति बहुत है। आपके स्वभाव में क्रोध रहता है परन्तु दिल के नरम हैं। आपको अनुशासनहीनता पसंद नहीं है। उदारता का गुण आपमें है। आप चंचल मस्तिष्क वाले तथा अधिक भावुक प्रकृति के हैं।

6, 8 व 12 भाव त्रिक भाव के नाम से जाने जाते हैं। तथा कुंडली के विशेष अशुभ भावों की श्रेणी में आते हैं। छठा स्थान दुस्थान है। व उपचय भाव हैं। छठे भाव का स्वामी और छठे भाव में बैठे ग्रह दोनों बुरा फल देते हैं। षष्ठ भाव से शत्रु, रोग, चिंता, ऋण और विमाता का विचार किया जाता हैं। त्रिक भावों में दूसरा भाव अष्टम भाव है। अष्टम भाव मृत्यु, आयु तथा बाधक भाव है। तथा अष्टम भाव निधन भी है। त्रिक भावों में दूसरा भाव अष्टम भाव है। अष्टम भाव मृत्यु, आयु तथा बाधक भाव है। तथा अष्टम भाव निधन भी है।

अष्टम भाव में स्थित होने वाले ग्रहों का अपना और अपने स्वामित्व वाले भावों के बलों का नाश हो जाता हैं। तथा इस भाव का स्वामी अष्टमेश जिस भाव में बैठता हैं। उस भाव के फलों का नाश करता हैं। व जिस भाव का स्वामी अपने स्थान से अष्टम स्थान में स्थित होता हैं। उस भाव के फलों की हानि होती हैं। कुंडली का द्वादश भाव व्यय का पर्याय हैं। यह भाव हानियां, टैक्स, निद्रा, शैया भोग, शत्रु, अवनति, विदेश यात्रा का भाव हैं।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

वृश्चिक लग्न में षष्ठ भाव के स्वामी मंगल है। लग्नेश व षष्ठेश मंगल आपके शरीर में शक्ति व आत्मबल की अल्प वृद्धि, शत्रुओं पर विजय, भाग्य व कर्म के मार्ग में रुकावटें, प्रतिष्ठा में न्यूनता, व्यय अधिक, विदेश स्थानों से लाभ दे सकता हैं।

बुध अष्टमेश व एकादशेश हैं, ग्रह विछोह का कारण, विदेश स्थान में निवास, शत्रुओं द्वारा शारीरिक कष्ट बुध अष्टमेश व एकादशेश हैं, ग्रहविछोह का कारण, विदेश स्थान में निवास, शत्रुओं द्वारा शारीरिक कष्ट, परेशानियों के साथ लाभ प्राप्ति दे सकता है।

आपके लग्न के लिए शुक्र सप्तमेश व द्वादशेश हैं। द्वादश में शुक्र की राशी तुला होने से आप धार्मिक, धर्म के प्रति निष्ठा, बचपन कष्टमय, स्वजनों तथा मित्रों से लाभ, व्यय अनियंत्रित, शान-शौकत का प्रदर्शन, क्षीण नेत्र ज्योति, नौकरी में अधिक लाभ प्राप्त दे सकता हैं।

आपकी कुंडली में षष्ठ भाव में राहु तथा द्वादश भाव में केतु की स्थिति से आपका जीवन संघर्षमय हो सकता हैं। मगर इन संघषों में आपको विजय प्राप्त होगी। पराक्रम से शत्रुओं पर प्रभुत्व बना रहेगा। यह योग आप में मानसिक तनाव व दबाव सहने की क्षमता में वृद्धि कर रहा हैं।

अष्टम भाव आयु, पुरातत्व और अन्वेषण का भाव हैं। आपकी यात्राओं में विध्न बाधाएं दे सकता हैं। अष्टम भाव से बुध धन भाव को दृष्ट करता हैं। इससे धन संग्रह में कठिनाइयाँ आती हैं। बुध की यह स्थिति आपके छोटे भाई बहन को पिताधिक्य, तेज बुखार और

दुर्बल देह का कारण बन सकती हैं। बुध की स्थिति अष्टम भाव में आपको बुद्धिबल से धन संग्रह की योग्यता दे रही है।

शुक्र अष्टम भाव में विवाह के उपरान्त भाग्योन्नति, सामान्य धनी, जीवन साथी द्वारा धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करता है। शुक्र अष्टम भाव में प्रेम सम्बन्धों में बाधाएं, जन्म स्थान से दूर निवास, परस्त्रीरत बना सकता है।

केतु की स्थिति द्वादश भाव में शुभ नहीं मानी गयी है, इसके परिणाम से आप खचीले, चिंतित, प्रवासी, सनकी, चंचल बुद्धि, आपके अधिक व्यय धार्मिक कार्यों में होते है, आप इन्द्रियों पर विजय प्राप्ति का प्रयास कर सकते है। आपको जीवन लक्ष्य प्राप्ति के लिए जीवन भर संघर्ष करना पड़ सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 3, 4, 6, 8, 9 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

शारीरिक सौष्ठ, व्यक्तित्व आणि प्रकृति

आपला जन्म वृश्चिक लग्नामध्ये झाला असल्याने शारीरिकघ्ष्ट्या आपण धष्टपुष्ट व निरोगी तसेच बलवान असाल. समर्पित व्यक्ती असल्याने कष्टाने सर्व कामे कराल. आपले वैशिष्ट्य म्हणजे आपण निर्भिड व्यक्ती असून स्वपराक्रम व साहसाने इतरेजनांना प्रभावित कराल. धनऐश्वर्य व वैभवयुक्त असाल आणि स्वकष्टाने भौतिक सुखसाधने प्राप्त करून त्याचा आनंदाने उपभोग घ्याल. विद्वान पुरूष असल्याने व विभिन्न विषयांचे ज्ञान असल्याने समाज आपल्याला यथोचित मान देईल. कुळ व कुटुंबामध्ये श्रेष्ठ बनाल व कुटुंबाचे पोषण तसेच सुख व सहयोग द्याल. मित्र व नातेवाईकांशी जवळीक असेल आणि त्यांना मदत करण्यास तत्पर असाल. भावंडे कमी असतील.

आपण एक महत्वाकांक्षी व्यक्ती असाल आणि मोठमोठी कामे करण्यात मग्न असाल. आपल्यामध्ये नेहमी आत्मशक्तीची प्रबलता राहील. आपण विद्वान व्यक्ती असाल परंतु कधी कधी इतरेजनांबद्दल द्वेष किंवा ईर्षा उत्पन्न होईल. त्याचबरोबर आपल्या प्रापंचिक व्यापात इतके गुरफटले जाल की त्यातून आरोग्यावर परिणाम होईल. इतरेजनांनी तुमच्या कामात अडथळे निर्माण केले तर प्रचंड क्रोधीत व्हाल. सत्यावर आपली श्रद्धा असेल आणि धनसंग्रह ही तुमची व्यक्तिविशेषता असेल. या संग्रहवृत्तीमुळे स्वजन रूष्ट होतील. स्वतःवर नियंत्रण ठेवायला तुम्हाला जमते, पण संवेदनशीलता व नैतिकतेचा अभाव असेल आणि काळानुसार पावले उचलण्याची वृत्ती असेल. नेतृत्वगुण आपल्यात आहेत, पण त्यात क्रौर्यही आहे. आयुष्यात विज्ञान किंवा गणित क्षेत्रात प्रसिद्धी मिळू शकते.

बुद्धिमान व्यक्ती असाल आणि सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त करण्याची प्रतिभा असेल. कधी कधी इतरेजनांबरोबर विवाद होतील, ज्यामुळे सामाजिक प्रभावात न्यूनत्व येईल. इतरांनी त्रास दिला तर वाणीमध्ये कठोरता येईल. अशाप्रकारे निडर, परिश्रमी, संग्रही, महत्वाकांक्षी व शत्रूहंता वृत्तीने सुखाने जीवन जगाल. यथोक्तम–

श्ररोनरोळत्यंतविचारसारोवद्यविद्याधिकता समेतः।
प्रसूतिकाले किल लग्नशाली भवेदलिस्तस्य कलिः सदैवः।।

– जातकाभरणम

अर्थात वृश्चिक लग्नामध्ये उत्पन्न झालेला जातक शूरवीर, तत्ववेत्ता, आपल्या विचारांना चुकीच्या दिशेने नेणारा आणि विवादात लीन राहातो.

धन, कुटुंब, डोळा आणि वाणी

आपल्या जन्मसमयी द्वितीय भावामध्ये गुरूची धनु राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपण एक आत्मविश्वासी व्यक्ती असाल आणि आपल्या विचारांचे कोणताही मुलाहिजा न बाळगता इतरांसमोर प्रगटीकरण कराल. यामुळे लोक प्रभावित होतील. जीवनातील संकटे व अडथळ्यांना घ्ढतेने सामना करून त्याचे निराकारण कराल. सत्यावर आपली निष्ठा राहील आणि त्याप्रमाणे चालण्यास तत्पर असाल. आपल्याला योग्य वाटेल तेच बोलाल आणि इतर आपले बोलणे कसे घेत आहेत किंवा त्यांच्यावर काय परिणाम होईल याची चिंता करत नाही. नजीकच्या नातेवाईकांशी औपचारिक संबंध ठेवाल पण काळानुसार त्यांच्याशी घनिष्ठ संबंध ठेवण्यासही उत्सुक राहाल.

आपले कौटुंबिक जीवन सामान्यपणे सुखी राहील. वाणी अत्यंत मधुर व ओजस्वी असेल व त्याद्वारे लोकांवर प्रभाव पाडाल. प्रापंचिक धनऐश्वर्य व भौतिक सुखसाधनांनी युक्त असाल आणि आनंदाने त्याचा उपभोग घ्याल. प्रवृत्ती धार्मिक राहील आणि वेळोवेळी धार्मिक कार्य व उत्सवाचे आयोजन करत राहाल. स्थिर धनाचे स्वामी, वाहनादिने युक्त यशस्वी व्यक्ती असाल. रसयुक्त पदार्थ आपल्याला आवडतात आणि धर्मोन्नतीसाठी सदैव आपले योगदान देत राहाल.

आई, वाहन, भौतिक ऐश्वर्य, भूमि आणि शिक्षा

आपल्या जन्मसमयी चतुर्थ भावात शनिची कुंभ राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपली आई एक बुद्धिमान स्त्री असेल आणि कुटुंबामध्ये पती व मुलांशी पूर्ण सहयोग करेल. ती परिर्तनप्रिय असल्यामुळे ती घरात असताना नेहमी काही ना काही बदल होत असतील. कष्टाळू स्त्री असेल आणि पतीच्या खांद्याला खांदा लावून सर्व जबाबदाऱ्या पार पाडेल. सर्व कर्तव्ये प्रामाणिकपणे पार पाडेल.

आपल्याला सुंदर व आकर्षक घर आवडते. बाग, अंगण असावे असे वाटते. आपले घर आधुनिक उपकरणे व संसाधनांनी सुसज्ज ठेवाल. तरूणावस्थेत घर बदलत राहील, पण वृद्ध ावस्थेत स्वतःचे घर होईल. वाहनसुखसुद्धा प्राप्त होईल आणि उत्तम वाहन लाभेल. पैतृक संपत्ती जरी प्राप्त झाली तरी त्याचा उपभोग घेण्यात अनेक अडथळे येतील. उच्च शिक्षण प्राप्त कराल. आयुर्विज्ञान, इंजीनिअरिंग व स्पर्धात्मक परिक्षांमध्ये आपल्याला अपेक्षित लाभ व यश प्राप्त होईल. आपल्याला गुप्त धनसुद्धा प्राप्त होऊ शकते. ज्योतिषादि गुप्त विद्यांचे ज्ञान असेल. त्याचबरोबर छातीचे डॉक्टरही होऊ शकता. पत्नीचे सुख, मिष्ठान्नप्रेमी, विद्वान, उत्सवी वृत्तीने आपला काळ घालवाल.

बुद्धि, सन्तान आणि लग्न सम्बन्ध

आपल्या जन्मसमयी पंचम भावामध्ये गुरूची मीन राशी उदित होती. याचा प्रभावामुळे आपण दार्शनिक, कमी विश्राम घेणारे म्हणजे कार्यतत्पर असाल. कल्पनाशील असाल. जीवनसाथीच्या रूपात सुंदर पत्नीची इच्छा ठेवाल आणि तीसुद्धा बुद्धिमान व कलावान असेल. संकीर्ण विचारांच्या स्त्रीपेक्षा विशाल हृदय व उन्मुक्त विचारांची स्त्री पत्नी म्हणून आवडते. पत्नीकडून मर्यादित प्रेम व संतुष्टीची अपेक्षा ठेवता.

संतती असेल आणि त्यांच्यापासून आपल्याला पूर्ण सुख व सहयोग वृद्धावस्थेत प्राप्त होईल व ते आपली श्रद्धापूर्वक सेवा करतील. तुम्ही मुलांच्या शिक्षणाची उत्तम व्यवस्था कराल आणि तेसुद्धा उच्च शिक्षण प्राप्त करण्यास समर्थ असतील. प्राचीन वैदिक ग्रंथांचे परिशीलन करण्यामध्ये रूची राहील. ज्योतिषज्ञानसुद्धा घ्याल. पूर्वजन्म व पुण्य कर्मांवर विश्वास असेल आणि वर्तमान काळातील सुखदु:खांचा संबंध पूर्वजन्मातील कर्माशी जोडाल. विचारांनी जरी आधुनिक असला तरी पुरातन रीतीरिवाजांवर विश्वास ठेवून त्याचे पालन कराल. आपली मुले सुंदर व गोरी असतील.

दम्पति, विवाह आणि साझेदार

आपल्या जन्मसमयी सप्तम भावामध्ये शुक्राची वृषभ राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपली पत्नी सुंदर, सुशील व आकर्षक व्यक्तिमत्वाची असेल. तुम्ही तिला आयुष्यभर सर्व भौतिक व प्रापंचिक सुख देण्याचा प्रयत्न कराल व तिच्या गरजा पूर्ण करण्याकडे नेहमी ध्यान द्याल. ती प्रामाणिक, विश्वासू व उदार वृत्तीची भाग्यवान स्त्री असेल. ती गोड बोलणारी, शांत, पतिव्रता, शिलाई, विणकाम किंवा चित्रकलेमध्ये प्रवीण व धार्मिक असेल. तिच्या गुणांवर तुम्ही फिदा असाल आणि नेहमी तिच्याकडे आकृष्ट राहून तिच्या कौटुंबिक मानसन्मानाची काळजी घ्याल. दोघांमध्ये परस्पर सामंजस्य उत्तम असल्यामुळे परस्पर प्रेम भावनेमुळे दाम्पत्यजीवन सुखात जाईल.

तुम्ही भाग्यवान व्यक्ती आहात आणि धनऐश्वर्य व वैभवाने युक्त असाल. जुगार किंवा सट्टयातूनसुद्धा पैसा मिळवू शकता. उत्तम धनार्जन होत असल्यामुळे आर्थिक स्थिती सामान्यतः चांगली राहील. तुम्च्यासाठी औषधी विभाग, रासायनिक शोधकार्य, सेना आदि क्षेत्र उपजीविकेसाठी उत्तम असेल. प्रेमाच्या बाबतीत तुम्ही अत्यधिक शृंगारप्रिय आहात आणि त्याचा पूर्ण आनंद घ्याल. आपल्यासाठी वृषभ, कर्क, मीन तसेच कन्या लग्नाचे जातक विवाहसंबंध, व्यापारात भागीदारी आणि मैत्रीसाठी चांगले आहेत. व्यापारात भागीदाराची निवड आपल्या बुद्धि मत्तेचा वापर करून करावी.

पिता, व्यवसाय आणि सामाजिक स्थिति

आपल्या जन्मसमयी दशम भावामध्ये सूर्याची सिंह राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपल्या वडिलांचे स्वास्थ्य उत्तम असेल. त्याचबरोबर त्यांना अधिकार व विशेष सन्मान प्राप्त करण्यात रूची असेल. मनाने प्रसन्न स्वभावाचे असतील व मानवजातीप्रति मनामध्ये दया भाव असेल. धार्मिक कार्य करण्यास नेहमी उत्सुक असतील आणि न्यायनिवाडा करताना आपल्या बुद्धिमत्तेची प्रचिती देतील. प्रवृत्ती क्षमाशील राहील व चांगले नियोजक किंवा नेत्याच्या रूपाने समाजात प्रसिद्ध असतील.

व्यावसायिकघ्ष्ट्या रसायनशास्त्र, संशोधन, गुन्हा अन्वेषण, औषधक्षेत्र, संरक्षण आदि विभाग आपल्यासाठी उत्तम व अनुकूल असतील आणि या क्षेत्रात आपल्याला सहज उन्नती व कीर्ती प्राप्त होईल. त्याचबरोबर आधुनिक वैज्ञानिक क्षेत्र किंवा संगणकसंबंधित विषयामध्ये आपल्याला रूची उत्पन्न होऊ शकते. राजकारणात प्रत्यक्ष संबंध कमीच असेल पण राजकारण्यांकडून यथोचित लाभ व सहयोग प्राप्त होत राहील. सरकारी विभागामध्ये अधिकारी व्यक्ती असाल किंवा एखाद्या कंपनीमध्ये उच्च पद प्राप्त करण्यास समर्थ असाल. कोर्टप्रकरणात यश मिळेल व त्यातून धनलाभ होईल. याव्यतिरिक्त तुम्ही पराक्रमी उग्रस्वभावी, साहसी कामे करण्यास उत्सुक असाल.

फलादेश - 2026

गोचरीने यंदा गुरु पंचम भावात आहे. त्यामुळे हा काळ भाग्यकारक संभवतो. ह्या काळात ज्योतिष, साहित्य व संगीताविषयी आवड निर्माण होईळ व त्यात ज्ञान–प्राप्त करण्यासाठी परिश्रम करण्यास तत्पर असाळ. तुमची आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ व भरपूर प्रमाणात ळाभ संभवतो. यंदा पुत्रप्राप्तीचा योग आहे. अविवाहितांच्या प्रेमप्रसंगांचा शुभारम्भ होऊ शकतो. व्यापार व कार्यक्षेत्रातीळ उन्नती करता हे वर्ष योग्य आहे व आवश्यक प्रमाणात धनार्जन संभवते. यंदा राजकीय नेते व उच्चाधिकारी वर्गाकडून ळाभ संभवतो. संततीकडून सहयोग मिळेळ. परंतु अन्य गोचरफळ ह्या काळात शुभ नसळे तरी दशा अनुकूळ फळ देईळ. म्हणून उपरोक्त शुभ फळांमध्ये कधी–कधी न्यूनता संभवते.

गोचरीने यंदा शनि प्रथम भावात आहे. तुमची प्रकृती मध्यम स्वरूपाची असेळ. मानसिक अशांती क्वचित्प्रसंगी अनुभवाळ. शनी विशेष अनुकूल नसल्याने सांसारिक कार्ये कष्टाने सम्पन्न होतीळ. ज्यामध्ये आंशिक सफळता मिळेळ. पत्नीची प्रकृती पण मध्यम असेळ पण संबंधात मधुरता राहीळ. त्याचबरोबर कौटुम्बिक शांती पण मध्यम स्वरूपाची असेळ. कार्यक्षेगात कष्टपूर्वक सफळता मिळेळ. नोकरी किंवा राजकारणात बढतीमध्ये विळंब होण्याची शक्यता आहे. त्याचबरोबर आर्थिक स्थिती पण मध्यम असेळ.त्याचबरोबर अन्य दशा व गोचर फळ सामान्य स्वरूपाचे असेळ. म्हणून इच्छित सफळता मिळवण्यास संघर्ष करावा ळागेळ. नेव्हाच धनप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर शनीच्या साडेसातीचा प्रभाव कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे मानसिक शान्ति व सफळता मिळेळ.

यंदा गोचरीने राहू बाराव्या भावात तर केतू सहाव्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष मिश्रित (शुभाशुभ) फळे देईळ. ह्या काळात प्रकृती मध्यम असेळ. मानसिक चिंता सतावतीळ. दूरवरचे प्रवास किंवा परदेशी जाण्याचा योग आहे. ज्यावर खर्च अधिक होईळ. त्याचबरोबर करमणुकीच्या गोष्टींवर खर्च कराळ. त्याचबरोबर करमणुकीच्या गोष्टींवर खर्च कराळ. त्यामुळे आर्थिक त्रास संभवतो. पण हाव्या भावातीळ केतूमुळे कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ व समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ. ह्या काळात शत्रूंवर विजय मिळवाळ. पण डोळयाचे विकार होण्याची शक्यता आहे. त्याचबरोबर अन्य गोचर अशुभ पण दशा शुभ असेळ. त्यामुळे शुभ फळांबरोबरच अशुभ फळेही मिळतीळ.

रवि ची महादशा मधीं शनि चा अंतर 10/04/2026 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर बुध चा अंतर प्रारंभ होणार। शनि प्रथम भाव मधीं वृश्चिक राशि मधी स्थित आहे। पण बुध अष्ट् भाव मधीं मिथुन राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूळ नाय रहणार, अतः ह्या वेळी सांसारिक अडचणे उत्पन्न होणारी, आर्थिक स्थिति विशेष चांगली नाय रहणारी तसेच कधीं–मधीं आर्थिक त्रास पण होणारी. कुटुम्ब अशान्त आणि परस्पर मतभेद रहणार, ब्यापार मधे सफळता नाय भेंटणारी तसेच उन्नति मार्ग मधे अडचणे उत्पन्न होउ सकतो. नोकरी मधे पदोन्नति साठी

उशीर होणार आणि अधिकारयां बरोबर मतभेद उत्पन्न होऊ सकतो. मित्र आणि सम्बन्धी विशेष सहयोग नाय प्रदान करणारे, तसेच समाजातील वांछित सफळता नाय भेंटणारी. शत्रु पासून कधीं–मधीं त्रास उत्पन्न होऊ सकतो आणि स्वास्थ्य सामान्य रहणार काही तरी अनावश्यक प्रवास होणारी. अतः असे सयम वर संयम आणि धैर्य बरोबर कार्य करावे.

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ नाय आहे अतः विशेष महत्वपूर्ण कार्य मधे सफळता नाय भेंटणारी. तसेच उन्नती मार्ग वर अडचणे येणारी कुटुम्ब मधे सुख शान्ती आणि परस्पर सहयोग नाय रहणार तसेच कुटुम्ब मधे मतभेद रहणार. व्यापार मधे घाटे होउ सकतो नोकरी मधे उन्नती साठी उशीर होउ सकतो. आर्थिक स्थिति चांगली नाय रहणारी तसेच कधीं–मधीं आर्थिक त्रास होउ सकतो. अतः जोखम कार्य पासून सावध रहायला पाहिजे शारीरिक स्वास्थ्य आणि प्रवास पासून पण सावध रहाय ला पाहिजे.

फलादेश - 2027

गोचरीने यंदा गुरु सहाव्या भावात आहे. म्हणून हा काळ मध्यम स्वरूपाचा असेळ. ह्या काळात शारीरिक स्वास्थ्य चांगळे रहाणार नाही. तसेच मानसिक असंतोष पण राहीळ. म्हणून सांसारिक कार्यात परिश्रमानेच उन्नती मिळेळ. व्यापार किंवा नोकरीमध्ये पण उन्नतीकरता संघर्ष करावा ळागेळ. तेव्हाच सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर शत्रू व विरोधक वारंवार अडथळे आणतीळ. पण त्यांचा सामना करण्यास तुम्ही समर्थ असाळ. ह्या काळात तुमचा खर्च जास्त होईळ. पण गरजेनुसार धनप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर मिळकत वाढण्याची शक्यता आहे. अन्य गोचर शुभ असळे तरी दशा चांगळी नसल्याने महत्वाची कामे सुरु करण्यात अडथळे येतीळ. पण नंतर स्वपराक्रम, कष्ट व बुद्धीने त्यावर मात कराळ. म्हणून हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असून परिश्रम व पराक्रमाने तुम्हाळा यशप्राप्ती होईळ. म्हणून गुरुचा उपावास, पूजा व दान नियमितपणे करावे.

यंदा शनी गोचरीने द्वितीय भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने कौटुम्बिक सुखशान्ती मध्यम स्वरूपाची असेळ. आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ व आवश्यक प्रमाणाळ धन मिळवाळ. मानसिक शांती अनुभवाळ व सांसारिक जवाबदान्या पार पाडाळ. ह्या काळात विरोधक निर्बळ असत्याने व्यापार किंवा नोकरीत इच्छित उन्नती व सफळता मिळू शकते.अन्य गोचर शुभ व दशा सामान्य असेळ. साडेसातीची शेवटची वर्षे असत्याने वेळप्रसंगी उन्नतीमध्ये अडथळे येतीळ. पण कष्टाने त्यावर मात कराळ. त्याचबरोबर शनीचा दुष्परिणाम कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा करावी. शनिवारी डाव्या हाताच्या मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे शुभ परिणाम वाढतीळ.

गोचरीने यंदा राहू अकराव्या भावात व केतू पाचव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष तुमच्यासाठी शुभ फळे देणारे असेळ. वेळप्रसंगी अशुभ फळे पण मिळतीळ. व्यापार व नोकरीत ह्या काळात कष्टाने सफळता मिळेळ. ळाभ मार्ग प्रशस्त होतीळ. नोकरी किंवा राजकारणात ह्या काळात पदप्राप्ती होईळ. ज्यामुळे समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष तुमच्यासाठी शुभ असेळ. धनवृद्धी होईळ. परंतु कधी–कधी क्रोध प्रदर्शित कराळ. तसेच मुळांकडून त्रास संभवतो. ह्या काळात त्यांच्या प्रकृतीची काळजी ह्यावी. त्याचबरोबर अन्य गोचर प्रतिकूळ आहे तर दशा शुभ आहे. त्यामुळे ह्या वर्षी शुभ फळे अधिक प्रमाणात मिळतीळ.

रवि महादशा 15/02/2027 ला समाप्त होणारी तसेंच त्या वेळी चन्द्र ची महादशा प्रारंभ होणारी। ह्या तुमचा जीवन मधीं परिवर्तन चा लक्षण आहे। ह्या वर्ष रवि ची महादशा मधीं बुध चा अंतर पासून शुरु होत आहे। रवि ची महादशा मधीं केतु चा अंतर 22/06/2027 ला समाप्त होणार। नंतर चन्द्र ची अंतर्दशा 22/04/2029 ला समाप्त होणारी।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल आहे, अतः शुभ आणि महत्वपूर्ण कार्य सफळ होणार. तसेच धन लाभ होणार आणि मिळकत वृद्धी होणारी कुटुम्ब मधे परस्पर सहयोग

रहणार तसेच सुख शान्ती रहणारी नोकरी मधे उन्नती प्राप्त करणारे अधिकारयां पासून मधुर संवध स्थापित होणार. स्वास्थ्य बरा रहणार आपण स्वतः चे वायदे पूर्ण नाय करणारे तसेच वन्धु वर्ग पासून सहयोग नाय भेंटणार अतः इतर माणूस वर भरोसे ठेउ नका.

हा समय तुमचा साठी मिळा–जुळा फळ देणार ह्या वेळी कधीं–मधीं अशुभ फळ पण प्राप्त होणारे. व्यापार साठी समय अनुकूल रहणार तसेच उन्नति आणि सफळता प्राप्त होणार नौकरी मधे उन्नती होणारी आणि अधिकारयां बरोबर मधुर संवन्ध रहणार आणि संतुष्ट रहणारे. कुटुम्ब सुख शान्ती आणि समृद्धी चांगली रहणारी तसेच परस्पर मधुर सम्बन्ध रहणारे. अध्ययन आणि पराविद्या मधे चि उत्पन्न होणारी तसेच मनोवैज्ञानिक अनुभव पण प्राप्त होणार. जोखम कार्य पासून हुसार रहाय ला पाहिजे.

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल आहे, अतः आपण सफळता अर्जित करणारे. वौद्धिक आध्यातमिक क्षेत्र मधे चि होणारी आणि उन्नती पण. मोठे अधिकारयां पासून संबन्ध स्थापित होणार. आर्थिक स्थित आणि सम्मान यश समाजातीळ प्राप्त क न प्रगति करणारे. कुटुम्ब सुख शान्ती आणि समृद्धी उत्तम रहणारी. आणि परस्पर सहयोग प्राप्त होणार. कोणी मांगळिक कार्य सम्पन्न होणार प्रवास पासून फायदे होणार मित्र आणि सम्बन्धी सहयोग करणारे शत्रु वर विजय प्राप्त होणारी आणि प्रतियोगी परीक्षा मधे सफळता प्राप्त होउ सकतो.

फलादेश - 2028

गोचरीने यंदा गुरु सहाव्या भावात आहे. म्हणून हा काळ मध्यम स्वरूपाचा असेळ. ह्या काळात शारीरिक स्वास्थ्य चांगळे रहाणार नाही. तसेच मानसिक असंतोष पण राहीळ. म्हणून सांसारिक कार्यात परिश्रमानेच उन्नती मिळेळ. व्यापार किंवा नोकरीमध्ये पण उन्नतीकरता संघर्ष करावा ळागेळ. तेव्हाच सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर शत्रू व विरोधक वारंवार अडथळे आणतीळ. पण त्यांचा सामना करण्यास तुम्ही समर्थ असाळ. ह्या काळात तुमचा खर्च जास्त होईळ. पण गरजेनुसार धनप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर मिळकत वाढण्याची शक्यता आहे. अन्य गोचर शुभ असळे तरी दशा चांगळी नसल्याने महत्वाची कामे सुरु करण्यात अडथळे येतीळ. पण नंतर स्वपराक्रम, कष्ट व बुद्धीने त्यावर मात कराळ. म्हणून हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असून परिश्रम व पराक्रमाने तुम्हाळा यशप्राप्ती होईळ. म्हणून गुरुचा उपावास, पूजा व दान नियमितपणे करावे.

यंदा शनी गोचरीने द्वितीय भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने कौटुम्बिक सुखशान्ती मध्यम स्वरूपाची असेळ. आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ व आवश्यक प्रमाणाळ धन मिळवाळ. मानसिक शांती अनुभवाळ व सांसारिक जवाबदान्या पार पाडाळ. ह्या काळात विरोधक निर्बळ असत्याने व्यापार किंवा नोकरीत इच्छित उन्नती व सफळता मिळू शकते.अन्य गोचर शुभ व दशा सामान्य असेळ. साडेसातीची शेवटची वर्षे असत्याने वेळप्रसंगी उन्नतीमध्ये अडथळे येतीळ. पण कष्टाने त्यावर मात कराळ. त्याचबरोबर शनीचा दुष्परिणाम कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा करावी. शनिवारी डाव्या हाताच्या मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे शुभ परिणाम वाढतीळ.

गोचरीय परिभ्रमणामुळे यंदा राहू दशमात व केतू चतुर्थात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्श तुमच्यासाठी सामान्य असेळ. महत्वाच्या कार्यात सफळता मिळेळ. व्यापार व नोकरीत उन्नती व सफळता मिळेळ. तसेच ळाभही संभवतो. नोकरी किंवा राजकारणात पदोन्नतीची शक्यता आहे. समाजात तुमचा प्रभाव असेळ. ह्या काळात राजकारणातीळ महत्वाच्या व्यक्तींशी संबंध येऊन त्यातून भविष्यात ळाभ होईळ. यंदा आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. धनप्राप्तीचे योग आहेत. आईवाडिळांच्या प्रकृतीच्या दृष्टीने हे वर्ष चांगळे नाही. वाहनसौख्य पण या काळात कमीच मिळेळ. ह्या काळात अन्य गोचर अशुभ पण दशा अनुकूळ फळे देईळ. त्यामुळे अधिकतः शुभ फळे मिळतीळ.

महादशा आणि अंर्तदशा स्वामी पंचम भावात मीन राशि मधीं स्थित आहे।

फलादेश - 2029

गोचरीने यंदा गुरु सप्तम भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे असेळ. व्यापारात किंवा नोकरीत उन्नती होईळ. विनासायास एखादी सफळता मिळेळ. बेरोजगार ळोकांना ह्या काळात काम मिळेळ. अविवाहितांचे विवाह जुळतीळ. पत्नीकूडून सुख व सहकार्य मिळेळ. परस्पर संबंध मधुर असतीळ. त्यामुळे कौटुम्बिक सुख मिळेळ. समाजात तुमची प्रतिष्ठा वाढेळ व सर्व ळोक तुम्हाळा मान देतीळ. आर्थिक स्थिती ह्या काळात चांगळी असेळ व धनार्जन करण्यात सुळ असाळ. परंतु खर्च पण वाढेळ. यंदा अन्य गोचरफळ अशुभ तर दशाफळ शुभ असेळ. म्हणून शुभ फळांबरोबरच अशुभ फळे पण अनुभवाळ.

यंदा शनी गोचरीने द्वितीय भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने कौटुम्बिक सुखशान्ती मध्यम स्वरूपाची असेळ. आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ व आवश्यक प्रमाणाळ धन मिळवाळ. मानसिक शांती अनुभवाळ व सांसारिक जवाबदान्या पार पाडाळ. ह्या काळात विरोधक निर्बळ असत्याने व्यापार किंवा नोकरीत इच्छित उन्नती व सफळता मिळू शकते.अन्य गोचर शुभ व दशा सामान्य असेळ. साडेसातीची शेवटची वर्षे असत्याने वेळप्रसंगी उन्नतीमध्ये अडथळे येतीळ. पण कष्टाने त्यावर मात कराळ. त्याचबरोबर शनीचा दुष्परिणाम कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा करावी. शनिवारी डाव्या हाताच्या मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे शुभ परिणाम वाढतीळ.

गोचरीय परिभ्रमणामुळे यंदा राहू दशमात व केतू चतुर्थात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्श तुमच्यासाठी सामान्य असेळ. महत्वाच्या कार्यात सफळता मिळेळ. व्यापार व नोकरीत उन्नती व सफळता मिळेळ. तसेच ळाभही संभवतो. नोकरी किंवा राजकारणात पदोन्नतीची शक्यता आहे. समाजात तुमचा प्रभाव असेळ. ह्या काळात राजकारणातीळ महत्वाच्या व्यक्तींशी संबंध येऊन त्यातून भविष्यात ळाभ होईळ. यंदा आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. धनप्राप्तीचे योग आहेत. आईवाडिळांच्या प्रकृतीच्या दृष्टीने हे वर्ष चांगळे नाही. वाहनसौख्य पण या काळात कमीच मिळेळ. ह्या काळात अन्य गोचर अशुभ पण दशा अनुकूळ फळे देईळ. त्यामुळे अधिकतः शुभ फळे मिळतीळ.

ह्या वर्ष चन्द्र ची महादशा मधीं तीन ग्रहां ची अंतर्दशा रहणारी। ह्या वर्ष चन्द्र चा अंतर 22/04/2029 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर मंगळ अंतर्दशा प्रारंभ होणारी तसेंच 21/11/2029 पर्यंत चलणारी। ह्या वर्ष चा आखेर राहु ची अंतर्दशा मधीं होणार। तुमचीं जन्मकुंडली मधीं महादशा चा स्वामी पंचम भाव मधीं मीन राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल आहे, अतः आपण सफळता अर्जित करणारे. वौद्धिक आध्यातमिक क्षेत्र मधे चि होणारी आणि उन्नती पण. मोठे अधिकारयां पासून संबन्ध स्थापित होणार. आर्थिक स्थित आणि सम्मान यश समाजातीळ प्राप्त क न प्रगति करणारे. कुटुम्ब सुख शान्ती आणि समृद्धी उत्तम रहणारी. आणि परस्पर सहयोग प्राप्त होणार. कोणी मांगळिक कार्य सम्पन्न होणार प्रवास पासून फायदे होणार मित्र आणि सम्बन्धी सहयोग करणारे शत्रु वर विजय प्राप्त होणारी आणि प्रतियोगी परीक्षा मधे सफळता प्राप्त होउ सकतो.

हा समय तुमचा साठी शुभ आहे, अतः मोठे अधिकारी पासून संबन्ध स्थापित होणार. आर्थिक लाभ होणार तसेच धर्नाजन साठी नवीन कार्य करणारे सांसारिक खर्चे पण खूप होणार. कुटुम्ब शान्ती आणि परस्पर स्नेह रहणार पण स्वास्थ्य प्रभावित होउ सकतो. मित्र आणि संवन्धी पासून सहयोग प्राप्त होणार फायदे ची प्रवास होणारी आणि समाजातीळ यश प्राप्त होणार. व्यापार नोकरी मधे उन्नती होणारी शत्रु पासून काही त्रास नाय होणार आणि विजय प्राप्त होऊ सकतो. अतः समय सदुपयोग करावे.

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूळ रहणार अतः असे समय वर धैर्य आणि उत्साह उत्पन्न होणार. कुटुम्ब शान्ती आणि परस्पर मधुर सम्बन्ध, सहयोग रहणार व्यापार, कार्य क्षेत्रातीळ फायदे होणार. नोकरी मधे उन्नति होऊ सकतो आणि मोठे अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध स्थापित होणार. समाजातीळ यश आणि वांछित सफळता भेंटणारी तसेच साहित्य, कळा, वगेरे मधे चि उत्पन्न होणारी. शारीरिक आणि मानसिक स्थिति चांगली रहणारी काही तरी प्रवास होणारी तसेच प्रवास पासून फायदे होणार. नवीन प्रयोजने सफळ होणारी तसेच सांसारिक वस्तु खरेदी साठी खर्चे होणार पण आर्थिक स्थिति अनुकूळ रहणारी अतः असा समय सदुपयोग करावे.

फलादेश - 2030

गोचरवश यंदा गुरु अष्टम भावात असेळ. म्हणून हे वर्ष तुमच्यासाठी मध्यम स्वरूपाचे असेळ. शारीरिक व मानसिकदृष्टया सुदृढ़ असळात तरी वेळप्रसंगी चिंता अनुभवाळ. कष्ट व पराक्रमाने सांसारिक कार्यात सफळता मिळवाळ. त्याचबरोबर नोकरी, राजकारण किंवा व्यापारात विरोधकांकडून अडथळे आल्यानी त्रास होईळ. पण परिश्रमपूर्वक त्यावर मात कराळ. यंदा एरवादा खटळा सुरु होऊ शकतो. आर्थिक स्थिती मध्यम स्वरूपाची असेळ. खर्च वादतीळ. ह्या काळात विशिष्ट ळाभ होण्याची संभावना आहे. त्याचबरोबर ज्योतिष, तंत्रमत्रादिवर श्रद्धा वाढेळ व ज्ञानार्जन कराळ.अन्य गोचर फळ शुभ तर दशाफळ मध्यम स्वरूपाचे असेळ. म्हणून परिश्रमपूर्वक सफळता मिळवाळ. तुम्ही नियमितपणे गुरुची पूजा तथा दान करावे.

ह्या वर्षी शनी गोचरीने तिसऱ्या भावात आहे. म्हणून हा काळ शुभकारक आहे. ह्या काळात अडळे ळी व महत्वाची सर्व कार्ये पूर्ण होतीळ. त्याचबरोबर व्यापार व आर्थिक क्षेत्रात उन्नती होईळ. ज्यामुळे भरपूर धनप्राप्ती संभवते. यंदा दूरचे प्रवास सम्पन्न कराळ. ज्यापासून इच्छित ळाभ व सन्मान मिळेळ. नोकरीत बदतीची शक्यता आहे. त्याचबरोबर यंदा अन्य गोचर प्रतिकूळ असळे तरी दशा शुभ असेळ. त्यामुळे वेळप्रसंगी शुभ फळांमध्ये कमतरता भासेळ. तरी सामान्यतः हे वर्ष चांगळे जाईळ.

गोचरीने यंदा राहू नवभात व केतू तृतीयात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष अधिकांशतः शुभ असेळ. ह्या काळात धर्माप्रती श्रद्धा कमी होईळ, महत्वाच्या कार्यात अडथळे येतीळ. पण स्वपराक्रम व कष्टाने त्यात सफळता मिळवाळ. भाग्यबळ कमी असल्याने मानसिक त्रास संभवतो. कुटुंबात पण ह्या काळात कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ. त्याचबरोबर गोचर अशुभ व दशा शुभ असेळ त्यामुळे यंदा अशुभ फळांबरोबर सामान्यतः शुभ फळांची प्राप्ती होईळ.

ह्या वर्ष चन्द्र ची महादशा मधीं राहु चा अंतर रहणार। राहु षष्ठ भाव मधीं मेष राशि मधीं स्थित आहात पण चन्द्र पंचम भाव मधीं मीन राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूळ रहणार अतः आपण सगड़े सफळता प्राप्त करणारे आणि कार्य मधे चि उत्पन्न होणारी. विशेष माणूष बरोवर सम्पर्क स्थापित होणार आणि मधुर सम्बन्ध रहणार कुटुम्ब सुख शान्ती तसेच परस्पर सहयोग रहणार आणि मधुर सम्बन्ध स्थापित होणार. आर्थिक स्थिति शुभ रहणारी तसेच धन आणि सम्मान अर्जित करणारे आणि मिळकत वृद्धी होणारी. कोणी प्रवास पासून लाभ होणार सामाजिक प्रतिष्ठा, यश, प्राप्त होणार मित्र पूर्ण सहयोग देणारे अतः समय सदुपयोग करावे.